संपादक की कलम से.....

अंधियारे आकाश में गीत के सितारे

रामअवतार बैरवा

गीत को काव्य का अहम तत्व माना गया है। लोक साहित्य में तो आज भी केवल गीत को ही काव्य माना जाता है। काव्य के लगभग पचास रूपों में अधिकांशतः छंद प्रधान हैं। कोरोना काल के बाद हिन्दी काव्य में गीत विधा को फिर से केन्द्र में आना मान लिया गया है । पत्र-पत्रिकाएं या तो बंद हो गई थीं या आन लाइन हो चुकी थी। इस काल में सोशल मीडिया बड़ी शक्ति के रूप में उभरा। उसने न केवल साहित्यकारों को मंच दिए वरन् नये कवियों और साहित्यकारों को साहित्यिक दुनिया में कदम रखने का अवसर भी दिया। वो खुद को साहित्यकार समझ भी बैठे । इसे अच्छा संकेत मान लेना इसलिए आवश्यक है कि जब साहित्य के समंदर में वो डूबेंगे तो बहुत से मोती निकालकर लाएंगे । वैसे भी नयी पीढ़ी अपना पूरा समय इंटरनेट पर बिताती है। उनके पास जितनी भी सृजनशीलता है, उसे वह रील बनाने और दोस्तों को संदेश भेजने में गंवा देती है। साहित्य और कविता के लिए अधिक समय बचा ही नहीं पाती ।

हिन्दी साहित्य में बड़े गीतकार अब नहीं के बराबर रह गए हैं। संयोगवश उन सबसे मेरा किसी न किसी रूप में नाता है। तब भी मैं यही कहूंगा कि किशन सरोज के गीत -'वो देखो कोहरे में चंदन वन डूब गया।' के साथ ही गीत का महका सारा उपवन किसी गहन अंधियारे में डूब गया। फिल्मों में भी अच्छे गीत सुने दशकों बीत गए। हाल ही संतोष आनंद के पास एक फिल्म निर्माता आए और उन्हें दो करोड़ रुपए देते हुए उनसे अपनी शर्तों के मुताबिक गीत लिखने का प्रस्ताव किया। संतोष आनंद ने हंसते हुए कहा -' गीतकार के सामने पैसा नहीं परिस्थिति रखिए।' निर्माता अपना-सा मुंह लेकर चला गया ।

युवा गीतकारों में अच्छे गीतकार उभरने की कोशिश कर रहे हैं पर उनकी कोशिश को मंच आगे नहीं बढ़ने दे रहा। बहुत जल्द, बहुत कुछ पा लेने की चाह उन्हें गीत के मूल भाव से जुड़ने का समय नहीं दे रही। कुछ कवियों ने ठेकेदारी प्रथा शुरू कर दी है। उनसे यह लिखित समझौता करवाया जा रहा है कि आप तीन साल तक सिर्फ हमारे साथ रहोगे, इतना भुगतान आपको किया जाएगा । दु:ख की बात यह है कि वह तैयार भी हो रहे हैं। कविता के लिए यह बहुत बड़ा खतरा है।

गीत प्रकाशन तक रहे तब भी उनके बचे रहने की उम्मीद है । अगर मंच पर पहुंच गए तो सब कुछ खत्म हो जाएगा। लक्ष्मी तो उनके साथ रह सकती है मगर सरस्वती का साथ पाने के लिए पूरी उम्र बीत जाएगी। उन्हें दूसरों की ही कविता सुनानी पड़ेगी। इंटरनेट और सोशल मीडिया पर उनके चाहने वालों की तादाद भले लाखों में मिल जाएं और मिलते रहेंगे पर यदि उनसे पूछा जाए कि आपको साहित्य अकादमी से कोई सम्मान मिला है या आपकी कोई रचना किसी पाठ्यक्रम में शामिल हुई है या आपकी कोई रचना सदन में कोट की गई हैं तो उनका जवाब निस्संदेह नहीं होगा। रचनाकार के प्रमाणीकरण के ये बड़े आधार हैं। किसी कवि का सोशल मीडिया पर नाम लिखने से उसका लेखन सामने आना बड़ी बात नहीं है, बड़ी बात तब है, जब उसकी रचना टाइप की जाए और उस रचनाकार का नाम सामने आ जाए ।

साहित्य रत्न ने गीत विधा के मूल स्वरूप को जिंदा रखने की भरपूर कोशिश आरंभ से ही की है। धीरज श्रीवास्तव और कुछ अन्य गीतकारों के गीत इस अंक में प्रकाशित कर गीत के इस अंधियारे आकाश में रोशनी खोजने प्रयास किया जा रहा है।